तृतीय अध्याय

' मोहन राकेश के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय '

'मोहन राकेश के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय --

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा-साहित्य में जिन उपन्यासकारों ने जीवन के यथार्थ स्वरुप को परिभाषित किया, मानव संबंधों की पुर्नव्याख्या प्रस्तुत की और नये पुराने मूल्यों के टकराव से उत्पन्न पीडा से संसिक्त आधुनिक बोध को प्रस्तुत किया उनमें मोहन राकेश का नाम उल्लेखनीय है। मोहन राकेश एक ऐसे उपन्यासकार हैं, जिन्होंने जो देखा, भोगा और चाहा उसे ईमानदारी के साथ व्यक्त किया। इसी कारण तो राकेश का औपन्यासिक मानस एक ऐसा दर्पण है, जिसमें स्वातंत्र्योत्तर समाज की विभिन्न छवियाँ प्रतिछवियों के रंग दिखाई देते हैं। साहित्य के माध्यम से अपना कोई विशिष्ट 'ईमेज' बनाने के लिए उन्होंने कोई समझौता नहीं किया और अपने साहित्य को भोगे हुए यथार्थ के निकट ही रखा।

मोहन राकेश की रचनाएँ वैयक्तिक अनुभवों से पुष्ट हैं परन्तु यह स्वीकार करना पडेगा कि उनका कथा संसार कोरी कल्पना की उपज नहीं है और उनकी कथाओं के पात्र हमारे चारों ओर बिखरे पडे हैं। मोहन राकेश के उपन्यास मूलत: मानवीय संबंधों को अपना वर्ण्य-विषय बनाकर चले हैं और उनका मूलाधार मध्यवर्गीय चेतना के पात्र हैं जो कि लेखक की अपनी चेतना से गहरे में जुडे हुए हैं।

इतना होते हुए भी मोहन राकेश ने पात्रों के व्यक्तित्व को स्वतंत्र रखा है। पात्र राकेश जी के ईशारोंपर नाचते नहीं, वरन स्वतंत्र बुध्दि से विचार करके अपनी समस्याओं का हल करते हैं। इस प्रकार मोहन राकेश का उपन्यास साहित्य समकालीन जीवन बोध के परिदृश्यों को उभारती हुई जीति जागती तस्वीर है। यहाँ राकेश के उपन्यासों का संक्षेप में विवेचन किया जाता है।

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

१) अँधेरे बंद कमरे --

राकेश का ` अँधेरे बंद कमरे ` उपन्यास औपन्यासिक शिल्प में बँधी हुई एक जीति-जागती तसवीर है। इस उपन्यास की कथावस्तु में देश के आडम्बरपूर्ण सांस्कृतिक आन्दोलन और इसके -हास की वास्तविकता को लेखक ने सात बार बसी और उजड़ी राजधानी दिल्ली की नब्ज पर हाथ रखकर पहचाना है। इस उपन्यास में ` दिल्ली का रेखाचित्र अथवा पत्रकार मधुसूदन की आत्मकथा अथवा ` हरबंस और नीलिमा के अन्तर्द्वन्द्व की कहानी `[१] को देखा जा सकता है।

इस उपन्यास में राकेश ने पत्रकार मधुसूदन, हरबंस, नीलिमा आदि के माध्यम से दिल्ली के आधुनिकतम वातावरण में मानव सम्बन्धों की खोज का प्रयास किया है।

` अँधेरे बंद कमरे ` सामयिक जीवन की कथा है। लगभग दस वर्षों में फैले हुए कथाचक्र को राकेश ने चार खण्डों में विभाजित किया है। पत्रकार मधुसूदन नौ साल बाद दिल्ली आया है, उसे काफी परिवर्तन दिखाई दिये। खुलकर मिलने पर भी उसे लगता है --

> ` हम लोगों के बीच कहीं एक लकीर है बहुत पतली-सी लकीर, जिसे हम चाहकर भी पार नहीं कर पाते ` ।[२]

मधुसूदन कुछ वर्ष लखनऊ में गुजार कर पुन: दिल्ली के ` न्यूहेराल्ड ` का संवाददाता बनकर आ गया है। हरबंस से उसका परिचय वर्षों पहले बम्बई में प्रेम लूथरा के माध्यम से हुआ था। उस समय हरबंस कविताएँ लिखता था, तथा दिल्ली के किसी कालेज में इतिहास के प्रोफेसर हरबंस ने रोब जमाने के लिए

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.७

२ - वही - - वही - पृ.११ ।

साहित्य, राजनीति, नृत्य, उदयशंकर, पंडित नेहरु आदि से सम्बधित चर्चा की थी।

कुछ समय बाद मधुसूदन बम्बई छोड़कर दिल्ली नौकरी की खोज में आ गया। वह कस्साबपुरा में अपने मित्र अरविंद के पास एक कोठरी में रहने लगा। अरविंद एक हिन्दी दैनिक में काम करता था और ठकुराइन के यहाँ गेस्ट बनकर रहता था। अत: मधुसूदन भी उसके साथ रहने लगा। मधुसूदन को कल की चिंता सताती थी। रात को इबादतअली के सितार की झंकारे उसके मन के बोझ को कम करती थी। वह मकान इबादतअली नामक एक बूढ़े मुसलमान सज्जन का था। कहने को वह घर का मालिक था पर उसकी हालत किरायेदारों से भी बदतर थी। क्योंकि उसके किरायेदार उसको परेशान किया करते थे। देश के विभाजन के बाद वह अपनी एक मात्र लड़की खुरशीद को लेकर पाकिस्तान चला गया था. किन्तु वहाँ दिल नहीं लग सका और वापिस लौट आया तब से वह इसी मकान में रहता है, कभी मौज में आने पर सितार बजाता है।

बहुत प्रयत्न करने के बाद मधुसूदन को 'इरावती' के सम्पादक के पास एक सौ साठ रुपये की नौकरी प्राप्त हो जाती है। मधुसूदन को नौकरी मिलने पर ठकुराइन को भी बहुत खुशी हुई। एक दिन ठकुराइन से ढाई रुपये लेकर वह कैनाट प्लेस के कॉफी हाउस पहुँचा। वहाँ हरबंस, नीलिमा और उसकी बहन से उसकी भेंट हुई। वह भोजन रात को हरबंस के घर पर करता है। पैसे हरबंस और नीलिमा को काफी पिलाने में खत्म हो जाने से वह पैदल ही कस्साबपुरा पहुँचता है। ठकुराइन खाना गरम रखे राह देख रही थी। फिर एक दिन उसकी मुलाकात काफी हाउस में नीलिमा, शुक्ला, जीवन भार्गव तथा शिवमोहन से भेंट होती है। इन सब की मुलाकाते बढ़ती गई। शुक्ला का एक भावुक प्रेमी है भार्गव जो कि चित्रकार भी है। दूसरी ओर मधुसूदन भी शुक्ला की ओर आकर्षित होता है - पर एक दिन शुक्ला भार्गव का दिल तोड़ देती है और भार्गव रो-धोकर दिल्ली छोड़कर चला जाता है। शुक्ला के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी वस्तु है जो सभी का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

मधुसूदन भी उसके सौन्दर्य से अभिभूत होता है। हरबंस के विदेश चलेजाने पर मधुसूदन खोया हुआ, थका और तनाव्ग्रस्त रहने लगा। कौफी हाउस में शुक्ला को सुरजीत के साथ देखकर उसे असह लगा। कुछ समय बाद शुक्ला का विवाह सुरजीत से हो जाने पर भी मधुसूदन के दिल में एक प्रकार का आकर्षण बना रहता है।

एक दिन घबराई हुई नीलिमा कस्साबपुरा आकर मधुसूदन को घर पर ले जाती है। हरबंस के पत्र उसके हाथ में देकर राय माँगती है, मुझे क्या करना चाहिए ? वह लंदन बुलाता है और --

" मैं भरतनाट्यम् ट्रेनिंग मौके को खोना नहीं चाहती "।[१]

हरबंस ने नीलिमा को लिखे अपने ग्यारह पत्रों में अपनी मानसिकता को टटोल टटोलकर विश्लेषित किया था। मधुसूदन नीलिमा को अपनी राय नहीं दे पाया वह रात को पी हुई हालत में घर पहुँचा। प्रतिक्षा करती ठकुराइन के कंधे पर हाथ रखा तो वह दूर खडी हो गई। शुक्ला को न पा सकने के कल्पना दुःख में वह दिल्ली से नौकरी छोड़कर चला जाता है।

अचानक नीलिमा की भेंट प्रसिध्द नर्तक उमादत्त से होती है जिसके ग्रुप की नर्तकी उर्वशी उसे छोड़कर भारत चली गई है तथा वह उर्वशी की जगह नीलिमा को यूरोप के दौरे पर ले चलने को तैयार है। हरबंस यूरोप के दौरे पर नीलिमा को ले जाने की अनुमिति देता है। यद्यपि राकेश हमें पेरिस, यूरोप, लंदन की अन्य जगहों पर भी ले जाते है। हरबंस अपने जीवन से बहुत उखड उखडा है।

यूरोप की यन्त्रणा की कथा आगे बढती है। हरबंस ने इण्डिया हाउस की नौकरी छोड दी। हरबंस जिसके पक्ष में न था अति आग्रह के वश हो नीलिमा को नृत्य के कार्यक्रम में सहभाग लेने पेरिस जाने देता है। नीलिमा के बर्मी कलाकार उबानू के साथ पेरिस में तीन दिन रुक जाने से हरबंस व्यग्रता,

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.१२४।

तनाव,यातना और सन्त्रास का अनुभव करता है। नीलिमा लौटी तो कुछ दिन तक हरबंस का शंकालु हृदय और भी सशंक हो उठता है। पत्नी नीलिमा के बारे में कुछ दिन तक हरबंस के मन में विश्वास - अविश्वास की बातें चलती रही। हरबंस रात भर मानसिक तनावों के बीच अत्यन्त बेचैन हो उठता है। परन्तु कड़वाहट भरे दाम्पत्य जीवन से तंग आकर नीलिमा अपनी भावना के लिए कोई न कोई आधार ढूँढने तथा पुराने दकियानूसी संस्कारों से अपने को मुक्त करने पेरिस में उबान्नू के साथ रुकी। परन्तु उसने हरबंस के साथ विश्वासघात नहीं किया था। अचानक नीलिमा का तार हरबंस को मिलता है कि उसे कुछ धन की आवश्यकता है जिसके भेजे जाने पर ही वह लौट सकती है। हरबंस पैसों का प्रबन्ध नहीं कर पाता और उसी रात नीलिमा ने अपना सोने का कंगन बेचकर होटल का बिल चुकाया और पेरिस से हवाई जहाज द्वारा इंग्लैंड लौट आयी। हरबंस उसे गले लगा लेता है पर उनके मिलने का आनन्द अल्पकाल में ही समाप्त होता है। दोनों एक दूसरे को दोषी ठहराते हैं और हरबंस के हृदय में नीलिमा के चरित्र के प्रति शंका कुशंकाएँ गहरी हो जाती हैं। यहाँ उपन्यास का दूसरा भाग पूरा होता है।

इस बीच मधुसूदन को दिल्ली में राजनीतिक रिपोर्टिंग से सांस्कृतिक विभाग में रख दिया जाता है। मधुसूदन फिर दिल्ली नगर चेतना के तहों में प्रवेश कर उसके अलग क्षेत्र, रोड बाजार,आदि की चेतना से गुजरकर चाँदनी चौक दिल्ली का धड़कता दिल से दिल्ली की ऐतिहासिक चेतना कला के सन्दर्भ में दृष्टिपात करता है। नादिरशाह की नृशंसता और कला किस प्रकार रौंदी गई, दिल्ली की लूट कैसे हुई इसका भी उल्लेख करता है।

हरबंस और नीलिमा फिर दिल्ली लौटते हैं।

"काफी हाउस परमंहसों का अड्डा है।"[१]

जहाँ पत्रकार - जमघट,दूसरा जमघट जिसमें कम्पनी डिस्ट्रीब्युशन इन्चार्ज दलाल

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.३३२।

ब्लैक मार्केटिंग करनेवाले आदि होते हैं। तीसरा सर्कल कॉफी हाऊस में प्रेमियों - दम्पत्तियोंका और चौथा लेखक,कवि,और आलोचकों का बैठता था। कॉफी हाऊस में नीलिमा और हरबंस में नृत्य कला प्रदर्शन के विषय में झडप होती है। भारत आकर नीलिमा अपने जीवन में कुछ कर दिखाना चाहती है - वह अपने नृत्य का एक शो दिल्ली में दिखाना चाहती है। नीलिमा पूरे उत्साह से कार्यरत है - टिकटे छपती हैं, बिकती हैं, पर हरबंस इन सब में तटस्थ रहता है - उल्टे वह नीलिमा को हतोत्साहित करता रहता है।

अन्तत: शो होता है मानसिक रुप से थकी हुई नीलिमा का नृत्य जम नहीं पाता। पति पत्नी में बहुत बडा झगडा होता रहता है। नीलिमा अपने शंकालु भीरु - अविश्वासी पति को छोडकर हमेशा हमेशा के लिए चली जाती है। शुक्ला हरबंस का ध्यान रखती है। हरबंस अकेलेपन के बोझ को शराब के नशे में भूला देना चाहता है। नीलिमा के चले जाने के बाद वह दिन भर बेचैन रहता है और रात भर तडफता रहता है किन्तु अन्तत: नीलिमा पुन: घर लौट आती है। यही पर उपन्यास का अंत होता है।

इस उपन्यास में चित्रित माँ-बाप और बच्चे की यह कहानी एक परिवार की है। यह परिवार भारत के एक बडे शहर दिल्ली का है। अत: कहानी का फैलाव उस शहर के साफ सुथरे और गंदे सभी हिस्सों तक है। आधुनिक जीवन की असंगतियों व जटिलताओं को प्रस्तुत करनेवाला राकेश का यह उपन्यास अपने समय की सही देन है।

२) <u>न आनेवाला कल</u> --

`न आनेवाला कल` मोहन राकेश का दूसरा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन १९६८ में हुआ है। इसमें राकेशजी ने एक निर्णय की अनेक प्रतिक्रियाएँ मुख्य रुप में उभारने का प्रयत्न किया गया है। समग्र उपन्यास सात अध्यायों में विभाजित है। वे आधार हैं -- त्यागपत्र, डर, कुरसी सहयोगी,नाटक, सडक और दरवाजे।

इस उपन्यास का प्रारम्भ स्कूल के हिन्दी मास्टर मनोज सक्सेना के त्यागपत्र देने के निश्चय के साथ होता है --

' त्यागपत्र देने का निश्चय मैंने अचानक ही किया था उसी तरह जैसे एक दिन अचानक शादी करने का निश्चय कर लिया था। मगर स्कूल में किसी को इस पर विश्वास नहीं था। '[१]

पहले भी स्कूली राजनीति और तनाव के कारण त्यागपत्र देने का विचार मनोज ने अनेक बार किया था, पर घर पर शोभा होने के कारण उस पर छोड देता था।

परन्तु इस खेल को भी अपने साथ वह जानबूझ कर खेलता था, मात्र अपना स्वाभिमान बनाए रखने के लिए। शोभा भी इस खेल को समझती थी।

' शोभा के लिए मनोज सक्सेना दूसरा पति था। वह अपने पहले पति के साथ वैवाहिक जीवन के सात वर्ष बिता चुकी थी। '[२]

पर मनोज और शोभा के पति पत्नी सम्बन्ध तनाव भरे थे, उनमें कोई हार्दिकता न थी। मनोज का कहना है --

' शोभा ने मेरे घर में आकर एक नयी शुरुआत की कोशिश की थी पर वह शुरुआत सिर्फ उसके अपने लिए थी। उस शुरुआत में मुझे उसके लिए वही होना चाहिए था जो कि वह दूसरा था जिसकी वह सात साल आदी रही थी। '[३]

एक दिन स्कूल में पार्टी होने के कारण मनोज को घर लौटने में विलम्ब हो जाने पर उसकी पत्नी शोभा स्कूल की तरफ जाने लगती है बीच में ही उसे मनोज मिलता है। मनोज ने कहा --

---

१ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.७

२ डॉ.रमेशकुमार जाधव - मोहन राकेश - व्यक्तित्व एवं कृतित्व -पृ.६३।

३ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.१४।

> " मैं तुम्हें बता तो गया था, स्कूल में पार्टी है तुम्हें पता है कि यहाँ पार्टी के लिए रुकना भी उतना ही जरुरी है जितना क्लास में पीरियड लेना ।"[१]

शामा मनोज के यहाँ के रंग-ढंग में अपने को न टालकर, खुरजा जाने को तैयार हो गई। जहाँ उसके पिता रहा करते थे। खुरजा से उसके पिता की बदली जालंधर हो चुकी थी। शामा को मनोज ने सहज ही जाने की आज्ञा दे दी तथा दूसरे ही दिन वह उसे बस अड्डे में जाकर गाडी में बिठा आया। इसके बाद मनोज के लिए अकेलेपन के सिवा कुछ नहीं रह गया था।

मनोज सक्सेना के त्यागपत्र देने के पीछे दो कारण थे एक --

> " वह स्कूल के परिवेश से तंग आ चुका है। हेडमास्टर टोनी व्हिसलर के आतंक में बँधा स्कूल, जहाँ अध्यापक स्वतन्त्र चिन्तन का दण्ड पाते हैं, निकाल दिये जाते हैं। पर त्यागपत्र के मूल में मनोज की यह दूसरी भावना भी है कि शामा के साथ जीने की यंत्रणा से बचाव।"[२]

वह एक ही गोली द्वारा दोनों पक्षियों का शिकार करना चाहता था। मनोज सक्सेना के पास इतने साधन नहीं थे कि बिना नौकरी के चार छ: महीने गुजारा हो सके, फिर भी उसने त्यागपत्र देने का निश्चय कर ही लिया था।

मनोज अपना त्यागपत्र हेडमास्टर व्हिसलर की मेज पर छोडकर चला आता है, और थोडी ही देर में त्यागपत्र की बात स्कूल के स्टाफ में फैल जाती है। हर एक जानना चाहता है कि आखिर मनोज सक्सेना ने त्यागपत्र क्यों दिया ? स्टाफ में विविध प्रतिक्रियाएँ होने लगी। हेडमास्टर ने बुधपानी के माध्यम से सक्सेना को छठवे पीरियड में अपने पास बुलाया तथा उसे त्यागपत्र देने का कारण पूछा पर सक्सेना ने इसे मात्र व्यक्तिगत कारण बतलाया। गिरधारीलाल ने भी मनोज सक्सेना को समझाने की कोशिश की। अन्तत: अपनी सारी कोशिशों

---

१ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.१६ ।

२ डॉ.मीना पिंपळापुरे - मोहन राकेश का नारी संसार - पृ.१२० ।

को विफल होते देखकर मिस्टर व्हिसलर ने त्यागपत्र बड़ी चेतावनी के साथ स्वीकार कर लिया कि यदि इसके पीछे साजिश है तो उसका कुछ भी बिगड़नेवाला नहीं है।

शाम तक त्यागपत्र की बात स्कूल के लड़कों में फैल गई थी। जो भी मनोज सक्सेना से मिलता, वह या तो सहानुभूति प्रकट करता या सुझाव देता, पर सक्सेना अपने निर्णय पर अडिग था। उसे स्कूल के अंतिम दो चार दिन ही गुजारने थे।

एक शाम स्कूल में नाटक खेला गया जिसमें स्कूली व्यवस्था पर भी कुछ टीका टिप्पणी थी। श्रीमती रोज ने अपनी इच्छा के विरुध्द अपने पति जिमी के निर्देशन में नाटक में काम किया। वास्तव में यह नाटक मिस्टर व्हिसलर को पसन्द नहीं था। अत: उसकी दखलंदाजी की श्रीमती रोज पर तीव्र प्रतिक्रिया हुई। वह ठीक से अभिनय नहीं कर पाई तथा रात के खाने में उसने एक वक्तव्य द्वारा अपने विरोधियों का मुँह बन्द कर दिया। मनोज के त्यागपत्र को भी लोगों ने व्हिसलर के विरोध के रुप में देखने की कोशिश की। इन सबसे चिढ़कर व्हिसलर आधे खाने में ही उठ आये। अन्य सभी को भी मजबूरन उठ जाना पड़ा।

शनिवार को मनोज सक्सेना की अंतिम ड्यूटी थी। रिपोर्टों को भरना ऐसा जड़ कार्य था, जिसका कोई अर्थ न था। इसी बीच शोमा का दूसरा पत्र भी आ गया। शोमा ने पत्रोत्तर न देने की शिकायत की और अपनी ओर से मनोज मन में तर्क देने लगा, पर प्रयास करने पर भी पत्रोत्तर न दे पाया। रात आठ बजे के बाद बीनी ने उसे होटल सेण्यारा में बुलाया था। बीनी पहाड़ी स्कूल में टीचर, अविवाहित तथा युवा है। जवानी के अनुरुप हल्का-फुल्का जीना उसे पसंद है। वह आधुनिक युग की नारी है। इसलिए --

> 'न जाने कितना कुछ है मेरे अंदर जिसे मेरे सिवा कभी कोई नही जानेगा।'[१]

ऐसा वह समझती है। बीनी और मनोज का सम्बन्ध नामहीन संबंन्ध है। ये

---

१ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.१२४।

एक दूसरे से जुड़ते है अपने अपने लिए और कुछ समय के लिए। बीनी मुक्त स्त्री है, समाज के एवं नैतिकता के बंधन उसके लिए नहीं है। समाज की वह बिल्कुल परवाह नहीं करती। उसकी धारणा है कि आदमी का समाज में बर्ताव, कल्पनाएँ अलग हैं और अकेलेपन में आदमी अलग होता है। समाज में आदमी सम्बन्ध का झूठे बड़प्पन का पर्दा ओढ़े रहता है। लेकिन वह इतना झीना होता है कि पास जाने से आदमी की असलियत मालूम होती है।

अपना सारा काम - काज समाप्त कर मनोज सक्सेना थोड़ी देरी से होटल सेवाय पहुँचा। बीनी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। दोनों जब बाहर आये तो सड़क पर चलते समय मनोज ने उसका हाथ पकड़ा और फिर छोड़ दिया। उसने कहा, क्यों हाथ छोड़ दिया ? फिर उसने हाथ पकड़ लिया। पगडंडी से अपर मार्ग तक पहुँचे। दोनों बाते करते है। बात पत्नी पर आकर खड़ी होती है, जिस पर बीनी को आश्चर्य नहीं होता है। दूसरों के विषय में भी बहुत बातें हुईं। सक्सेना ने उसे चुम लिया और बाहों में जकड़ लिया, पर वह काफी निराश हो चुका था। वह कहती है कि यहाँ प्रत्येक को मैंने नकली चेहरों को ओढ़े देखा है। वह आगे कहती है --

> ' जहाँ तक शरीर की नैतिकता का सम्बन्ध है, उसे लेकर मेरे मन में कोई कुंठा नहीं रही। ' [१]

बहुत से लोगों के साथ उसका शारीरिक संबंध है। वह खुद नहीं चाहती कि कोई उसे ' इस्तेमाल ' करे। बीनी अपना अहं कायम रखना चाहती है। किसी के आगे झुकना, किसी के लिए विवशता का अनुभव करना उसे बर्दाश्त नहीं होता।

बीनी अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण करती है। मनोज मात्र चुपचाप सुनता रहता है। यद्यपि वह अपने अन्दर जिन विकृतियों को पाती है, उसका कारण अकेलापन और उसकी छटपटाहट को मानती है। बीनी पत्नी को तार देकर बुलाने की मनोज को राय देती है। मनोज की यह यहाँ आखिरी रात थी। वह अपना बचा खुचा सामान किसी को दे देने की सोच रहा था। कोहली भी

---

१ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.१३६।

दूसरी शादी कर परेशान था। वह मनोज का पड़ोसी था। लोग मजाक करते थे, क्या बात है कोहली ? नई शादी की है, इसका यह मतलब तो नहीं कि रात - रात भर सोओ नहीं। अगर इतना ही प्यार है तो महीने, दो महीने की छुट्टी लेकर उसे कहीं बाहर ले जाओ। कोहली मानसिक रुप से टूटता जा रहा था। नौकर भी उसने निकाल दिया था। इनमें से जिस चीज ने शारदा को सबसे ज्यादा तकलीफ पहुँचाई थी। वह था नौकर का निकाल दिया जाना। इससे उसका एकमात्र सुख दोपहर को बिस्तर में लेटे हुए भूपतसिंह को आवाज देकर खाना वहीं मंगवा लेना उससे छिन गया था। जब कोहली ने उससे शादी की तो अपनी आमदानी का हिसाब, मकान, खाना सब गिनकर बताया था। अपनी बैंक की पास बुक भी दिखाई थी। जिसमें दस हजार रुपये जमा था। कोहली की पत्नी शारदा को वह चिल्लाकर कहता था दो सौ रुपये तनखाह में मैं नौकर नहीं रख सकता। कोहली शारदा को बार बार डाँटता था कि -- आस पास और किसके यहाँ है नौकर ? इतनी तनखाह में रोटी का ही गुजारा नहीं होता नौकर कौन रख सकता है ? नौकर भूपतसिंह पर उसे शंका थी। कोहली की पत्नी शारदा की खटर खटर में मनोज का हमेशा ध्यान रहता था। आज शारदा ने समय पूछने के लिए मनोज का भी दरवाजा खटखटाया। मनोज सोचता है कि शोभा को मिलना उचित है कि नहीं। किसी भी बहाने एक बार शोभा के पास जाऊँ या न जाऊ ?

मनोज को बतलाती हुई शारदा कहती है --

> ' मेरे माँ-बाप ने पता नहीं क्या देखकर मुझे इसके साथ ब्याह दिया। यह भी कोई आदमी है, जिसके साथ एक लड़की जिन्दगी काट सके। मेरी अभी उम्र ही क्या है, जब शादी हुई, तब मैं पूरे ,उन्नीस की भी नहीं थी। मेरे माँ-बाप ने इतने दिन दौड धूप करके मेरे लिए ढूँढा भी तो यह आदमी। ' [१]

शारदा अपनी दूसरी शादी करना चाहती है, लेकिन गरीब माता-पिता कहीं

---

१ मोहन राकेश - न आनेवाला कल - पृ.१५१।

से खर्च उठायेंगे इसकी उसे चिन्ता है। मनोज उसे आराम करने की सलह देता है। उसका पति कोहली उसे कभी कभी पीटता भी था। वह मनोज से कहती है -- एक औरत और सब कुछ सह सकती है, पर मार खाना कभी बरदाश्त नहीं कर सकती। आजकल कोई जमाना है मार खाने का ? इस दृष्टि से वह शोमा की भी प्रशंसा करती है। मनोज चिन्ता में था कि वह उसे अपने कमरे में कैसे वापस भेजे।

अन्त में शारदा वहाँ से जाये, इसलिए वह बहाना बनाकर कहता है कि कोहली अब आता ही होगा, मुझे जल्दी से काम पूरा करके कुछ लोगों से मिलने के लिए जाना है। मनोज उसे टालता है।

मनोज सुबह उठा। अकेलापन अब भी था। स्कूल जाते हुए घास छीलती हुई और मुसकराती हुई काशनी मनोज से मिली। उसे मनोज बतलाता है कि फकीरा को तीन बजे से पहले भेजना कुछ चीजें है, उन्हें वह ले जाय। लेकिन काशनी स्वयं सामान लेने आई और सामान लेकर जाने लगती है कि मनोज उसे अन्दर बुलाकर वह उसे बाहों में जकड़कर चूम लेता है, पर काशनी ने कोई प्रतिक्रिया जाहिर न की। मनोज सक्सेना के पूछने पर उसने बताया कि उसका आपरेशन हुआ है। सक्सेना ने गहरी वितृष्णा एवं पराजित भाव के साथ उसे चला जाने दिया।

दूसरे दिन सारा सामान बाँधकर मनोज बस स्टैंड जा पहुँचा। यद्यपि उसे रेल में जगह मिल सकती थी पर अपने सहयोगी अध्यापक उसी समय रेल से छात्रों के साथ यात्रा पर जानेवाले थे इसलिए वह रेल से नहीं जाता। क्योंकि वह पुन: उसी वातावरण में लौटना नहीं चाहता था। उसे इसके बदले - बस यात्रा की देरी, यंत्रणा सब कुछ बर्दास्त थी।

'न आनेवाला कल' कुल मिलाकर एक विलक्षण कसाव में बँधी रचना है। इसमें विभिन्न संभावनाओं का बोध भी होता है।

३) `अन्तराल`

यह मोहन राकेश का तिसरा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन १९७२ में हुआ था। `अन्तराल` गहरे मानवीय संबंधों की कहानी है या कहा जा सकता है कि आधुनिक मानव के व्यस्त जीवन के बीच आपसी सूक्ष्म संबंधों को पकड़ पाने, रेखांकित करने और परिभाषित करने का एक प्रयास है।

`अंतराल` स्त्री और एक पुरुष के बीच के संबंधों की कहानी है। यह कहानी शारीरिक और मानसिक अपेक्षाओं के रास्ते से गुजरती है। इसमें कुछ नामहीन सम्बधों की तलाश है, मन के अँधेरे से उबरकर किसी तरह सतह को पा लेने की छटपटाहट है। श्यामा के सम्मुख प्रश्न है कि शारीरिक आकांक्षा की पूर्ति सचमुच एक तृप्ति होगी या निराशा ? और कुमार सोचता है कि --

> ` दो आदमी जिस आसानी से जिन्दगी भर के रिश्ते में अपने को बाँध सकते हैं, उसी आसानी से मुक्त क्यों नहीं हो सकते ? `[१]

श्यामा और कुमार दोनों, सम्बन्धो की तलाश में उपलब्धि के क्षण पाना चाहते हैं।

जहाँ राकेश जी का `अँधेरे बंद कमरे` दिल्ली की भीड़ में खोये पत्रकार मधुसूदन और उसके परिवेश की कहानी है, वहीं `अन्तराल` बम्बई के व्यस्त जीवन में जूझते कुमार और श्यामा की रिक्तता की खोज है। तीन साल बाद श्यामा ने कुमार को आज फोन किया तो कुमार ने उसे साढे पाँच बजे टी सेन्टर पर मिलने का समय निश्चित किया। वह जगह उसने जान बूझकर चुनी थी। पर कुमार के टी सेन्टर पहुँचकर छ: बीस तक प्रतिक्षा करने के बावजूद उसके हाथ निराशा ही लगी, क्योंकि बारिश शुरु हो जाने के कारण श्यामा आ नहीं सकी।

श्यामा से कुमार की पहली मुलाकात उस छोटे से कस्बाती शहर में एक दोस्त सुभाष की नयी-नयी शादी की पार्टी में शिवालिक कालेज के प्रोफेसर

---

१ मोहन राकेश - अन्तराल - पृ.१९८।

A 12001

मलहोत्रा ने करवाई थी। तब कुमार नित्यानंद कालेज में दर्शन विभाग का अध्यक्ष था। प्रोफेसर मलहोत्रा ने बताया था कि श्यामा उनकी साली है जो मण्डी के एक हाईस्कूल में हेडमिस्ट्रेस है तथा बिना नौकरी छोड़े निजी तौर पर फिलासफी में एम.ए.करना चाहती है। वह छुट्टी लेकर आई है।

जब श्यामा स्वयं को पूरी तरह खोलकर अपने आपको कुमार के सामने रख देती है तो वह पूरी सहानुभूति और सहृदयता से स्वीकार करता है। वह दो बार श्यामा को बाहों में लेता है। दोनों बार कारण परिस्थिति ही थी, कुमार की वासना नहीं। कुमार में स्त्री शरीर की भूख नहीं थी, यह प्रामाणिक तथ्य है। जब उसकी प्रेमिका लता का विवाह कहीं और निश्चित हो जाता है तथा वह बिना ब्याह के ही उससे शारीरिक संबंध की बात कहती है तो कुमार पर इसकी तीव्र प्रतिक्रिया होती है और वह इतना ही कह पाता है —

'देखो मैंने तुमसे सिर्फ इतना नहीं चाहा था।'[१]

श्यामा की जिन्दगी काफी अकेली है। श्यामा के विवाह के डेढ़ वर्ष पश्चात ही उसके पति देव की टाइफाइड से मृत्यु हो जाती है। उस समय श्यामा ने जो कुछ उससे चाहा उसे नहीं मिला। देव ने सदैव उसके साथ एक तटस्थ भाव अपनाये रखा। वह कभी भी अपनी जिंदगी का खाता देव के साथ बंद नहीं कर पायी। वह अपनी सारी शिकायतें उसी पर लादकर जीना चाहती है, क्योंकि और किसी तरह से जीना उसे संभव ही प्रतीत नही होता है। श्यामा के अनुसार —

'वह डेढ़ साल भी मेरे साथ जिया नहीं था, सिर्फ मुझे झेलता रहा था। तुम ऐसे आदमी के लिए क्या कहोगे जो कभी खुश दिखायी न दे, फिर भी कभी डाँटे नहीं, कभी शिकायत मुँह पर न लाये ? वह इतना चुप रहता था कि कभी मुझे देख भी लेता किसी के साथ कुछ करते, तो शायद दूसरी तरफ मुँह कर लेता और मैं उस उदासिनता के लिए न तब क्षमा कर सकती थी, न अब कर सकती हूँ।'[२]

---

१ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.५८।
२ वही वही पृ.७१।

देव यदि जिंदा होता तो वह उसके साथ लड-झगड सकती थी। लेकिन अब देव के साथ उसका संबंध उसी जगह रुक गया है जहाँ देव की मौत का दिन था। श्यामा का दृष्टिकोण एक पक्षीय है।

श्यामा तथा कुमार दोनों अपने जीवन की रिक्तता के कारण ही एक दूसरे के समीप आ सके। दोनों ही स्त्री - पुरुष के बीच शारीरिक सम्बन्धों के अतिरिक्त कुछ और खोजना चाहते हैं। कुमार मानता है कि --

> ' शारीरिक आकर्षण से हटकर एक और आकर्षण होता है। व्यक्तित्व का चुम्बक आकर्षण जो शारीरिक आकर्षण से कहीं अधिक मन को खींचता है।' [१]

और श्यामा भी स्त्री-पुरुष के निर्माण भेद के सम्बन्ध से दूर कुछ ..उपलब्धि पाना चाहती है। कुमार के लिए श्यामा में आकांक्षा उत्पन्न होती है। कुमार भी श्यामा के प्रति आकर्षित होता है किन्तु जैसे ही आवेश में आकर कुमार उसे बाहुपाश में बाँधना चाहता है वह छिटककर अलग हो जाती है। मन में प्रश्न उठता है --

> ' क्या यही प्यार है ? देव ने भी यही चाहा। उसके जीजा ने भी यही चाहा और कुमार भी यही चाहता है और इन सारे अनुभवों से उसमें प्यार के नाम पर गहरी वितृष्णा उत्पन्न होती है।' [२]

श्यामा की सास, ननद सीमा और लड़की पूना में रहती हैं। कुछ दिन तो प्रोफेसर कुमार गम्भीररुप से दर्शनशास्त्र पढाते रहे पर धीरे धीरे, जैसे जैसे घनिष्ठता अधिक बढ़ती गई, दोनों एक दूसरे के सामने खुलते गये। अपना, तन, मन, सबकुछ हलका करने लगे। बोझिल अकेलापन दोनों ही के जीवन की समान नियति थी। श्यामा के पूछने पर कुमार ने अपने एक प्रेम प्रसंग का सविस्तर वर्णन किया तो दूसरी ओर श्यामा भी अपने पति आदि के बारे में काफी कुछ बताती रही। दोनों को एक दूसरे में एक ऐसा व्यक्ति मिल गया कि जिसके साथ अपना

---

१ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.५१

२ डॉ.ज्ञान अस्थाना - हिन्दी कथा साहित्य समकालिन संदर्भ - पृ.९८।

कुछ बाँधा जा सके। जो दो घण्टे वे आमने सामने बैठे रहते थे, वह जैसे उन दोनों के लिए अपने आपका लेखा जोखा करने का समय होता था। जैसे दोनों के पास कहने की जितनी भी निरर्थक बातें थीं, उन्हें कह सकने का यह अवसर खोना नहीं चाहते थे।

श्यामा ने कुमार को यह भी बताया कि उनके जीजाजी प्रोफेसर मल्होत्रा के रंग ढंग उसके प्रति अच्छे नहीं हैं। --

> 'एक दिन शाम वे दोनों घूमने निकले तो उस समय खूब वर्षा हुई, दोनों काफी भीग जाते हैं ऐसे में लौटते हुए कुमार अचानक उसे अपनी बाहों के वृत्त में कस लेता है और अपने होठों से उसके होठों को ढक लेता है, कुमार का यह व्यवहार अस्वाभाविक नहीं है तथा श्यामा भी इस स्थिति के लिए उतनी ही उत्तरदायी है जितना कुमार।'[१]

फिर भी निकट आकर भी दोनों दूर ही रहे।

श्यामा को आखिर एक दिन पूना जाना पड़ा और वहाँ से बंबई भी जाना पड़ा। श्यामा का मन चाहता था कि कुमार मुझे स्टेशन तक पहुँचाने के लिए आये। श्यामा के मन में अनेक बार विभिन्न शंकाएँ उत्पन्न होती थी इसलिए उसने कुमार को अगले स्टेशन पर जा पहुँचने का वादा किया। कुमार ट्रेन की प्रतीक्षा करता रहा। आखिर बहुत रात हो गई लेकिन ट्रेन नहीं आयी। कुमार ट्रेन का इंतजार करता रहा ट्रेन आने के लिए पाँच मिनट का वक्त था। कुमार को रात के समय नींद आ गयी थी इतने में ट्रेन आ गयी। श्यामा ट्रेन के तीसरे डब्बे से बाहर देखती रही वहाँ कुमार श्यामा को मिला। दोनों ने एक दूसरे को हाथ मिला ये। आखिर यह अपने अकेलेपन की दुनियाँ में लौट आया।

कुमार ने आखिर एक दिन यह नौकरी छोड दी और बम्बई की एक

---

१ डॉ.सुषमा अग्रवाल - मोहन राकेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व-पृ.३६४।

कंपनी में नौकरी स्वीकार कर ली । एक दिन श्यामा ने कुमार को बंम्बई आने के लिए खत भेजा लेकिन कुमार को वह खत नहीं मिला और उस खत में श्यामा ने कुमार को गाडी का टाईम भी लिखा श्यामा ने उस समय बस के अड्डे पर स्वागतार्थ नौकर भी भेजा लेकिन कुमार का आखरी बस का इंतजार करके भी नौकर वापस आ गया और उसने श्यामा को कुमार के न आने की खबर सुनवाई। श्यामा कुमार के न आने के कारण बेचैन थी । पर वह अन्तर्मन से यही चाहती रही कि कुमार न आए एक तो लोक भय का दूसरा भय था अपने आपसे जिससे वह कभी छूट नहीं पाती थी । आखिर कुमार नहीं आया । श्यामा की सास ने पूनावाला मकान बेच दिया और श्यामा की साझेदारी से एक बंम्बई मे एक फ्लेट खरीद लिया । श्यामा भी बम्बई आकर अपनी सास,पुत्री एवं ननद सीमा के साथ यह सोचकर रहने लगी कि यदि उसे यहाँ का जीवन अजनबी सा लगा तो वह अपनी नौकरी छोड देगी और यहीं कुछ काम कर लेगी । पर यहाँ बम्बई में अपने ही घर में वह अजनबी बन गई । श्यामा और सीमा इन दोनों के यहाँ झगडे होने लगे । श्यामा की सास को यह अच्छा नहीं लगा । श्यामा का प्रमुख आकर्षण कुमार ही था ।

अचानक एक दिन वह कुमार से मिलने उसके दफ्तर जा पहुँचती है । श्यामा के आग्रह पर दोनों कुमार के घर आये है । श्यामा कुमार से कहती है कि कुमार मैं बीस मिनट में तुम्हारे घर पर से वापस आ जाऊँगी ना ? कुमार जवाब देता है कि हाँ ! कुमार किचन रुम में जाकर दोनों के लिये चाय तैयार करता है । श्यामा कहती है मैं चाय लाती हूँ आप बैठिये । लेकिन चाय में दूध नहीं होता । इस समय कुमार ने श्यामा को बताया कि वह विवाह कर चुका था परन्तु पत्नी से न निभ सकने के कारण उसका विवाह विच्छेद हो गया था । कुमार और श्यामा अपने आप को खो बैठे तथा दोनों ने कुछ अनचाही चेष्टाएँ की जिसका कुमार को बडा पश्चाताप हुआ । दोनों एक दूसरे से अलग हो गये । उनका विवाह नहीं हो पाया ।

अन्तराल में कुमार कहता है —

'कुछ बातें इतनी निजी होती है कि वह किसी दूसरे से उन्हें नहीं बाँट सकता बल्कि अपने आपके उस दुखते अंश को खोलकर अपने सामने भी नहीं ला सकता ।'[१]

वस्तुत इस ग्रन्थि के कारण ही आज जीवन दुखी है। दोनों के बीच का अन्तराल ज्यों का त्यों बना रहा। अंतत: यही कहा जा सकता है कि 'अन्तराल' उपन्यास मोहन राकेश के उपन्यसों में मानवीय संवेदना की तलाश है।

निष्कर्ष —

राकेश का 'अँधेरे बंद कमरे' उपन्यास औपन्यासिक शिल्प में बंधी हुई एक जीती-जागती तसवीर है। राकेश स्वयं कहते है कि इसे क्या कहूँ — 'दिल्ली का रेखाचित्र अथवा पत्रकार मधुसूदन की आत्मकथा अथवा हरबंस और नीलिमा के अन्तर्द्वन्द्व की कहानी।' इस उपन्यास में लेखक ने दिल्ली जैसे महानगर का चित्रण किया है। आजादी के बाद भारत के फैलते महानगर, जहाँ एक ओर ऊँची-ऊँची इमारते हैं एक सम्पन्न समाज है, नेता और अधिकारी हैं, वहीं दूसरी ओर गरीब सामान्यजन हैं। इन दोनों के बीच मध्यवर्ग का जीवन है जो संत्रास और घुटन में जीता है, उसे राहत नहीं मिल पाती। इसमें हरबंस तथा नीलिमा के दु:खमय दाम्पत्य जीवन को यथार्थ रुप में चित्रित किया है। आधुनिक जीवन की असंगतियाँ और जटिलताओं को प्रस्तुत करनेवाला यह उपन्यास समय की सही देन है।

'न आनेवाला कल' राकेश जी का दूसरा उपन्यास है इस उपन्यास में वर्तमानकालीन शिक्षा व्यवस्था तथा स्कूल का दमघोंटू वातावरण आदि पर तीखा व्यंग्य किया गया है। यह उपन्यास स्त्री-पुरुष सम्बन्धो को लेकर चलता है। इस उपन्यास का नायक मनोज सक्सेना है, जो कि शिमला कान्वेण्ट स्कूल में अध्यापक है और वह एक दिन त्यागपत्र दे देता है। स्कूल के दमघोंटू वातावरण

---

१ मोहन राकेश - अंतराल - पृ.३१।

में स्वामीमानी मनोज रह नहीं सकता । उसकी पत्नी शोमा आधुनिक नारी का प्रातिनिधिक पात्र है । शोमा ने अपने प्रथम पति के साथ सात वर्ष बीताये थे और उसकी मृत्यु के पश्चात मनोज से दूसरा ब्याह किया था । शोमा वर्तमानकालीन आधुनिक नारी का प्रातिनिधिक पात्र है । किन्तु आधुनिकता के नाम पर ऐसी नारियाँ अपने बरबादी का कारण स्वयं बन जाती है । मनोज को अपने मनोनुकूल न पाकर वह उसका त्याग करके फिर अपने पिता के घर लौट जाती है । इस उपन्यास में लेखक ने दु:खमय दाम्पत्य जीवन के कारणों को स्पष्ट किया है ।

' अंतराल ' उपन्यास में राकेश ने नायक कुमार तथा नायिका श्यामा के माध्यम से वर्तमानकालीन स्त्री-पुरुष के बीच परिस्थितियों के प्रमाव स्वरुप किस तरह ' अंतराल ' बना रहता है, इसे प्रकट किया है । कुमार और श्यामा एक-दूसरे को अंतर मन से चाहने लगते हैं । परन्तु जटिल परिस्थितियों के फल: स्वरुप दोनों हमेशा हमेशा के लिए एक-दूसरे के नहीं हो सकते और दोनों के बीच का ' अन्तराल ' मिट नहीं जाता । इस उपन्यास में बम्बई जैसे महानगर का चित्रण भी राकेश ने पर्याप्त मात्रा में किया है ।